NAFCC परियोजनांतर्गत पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धति के प्रचार प्रसार हेतु चलित परंपरागत स्वास्थ्य उपचार कैंप

प्रवास प्रतिवेदन

महासमुंद वनमण्डल

प्रस्तावना :—

NAFCC परियोजनांतर्गत पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धति के प्रचार प्रसार हेतु चलित परंपरागत स्वास्थ्य उपचार कैंप का आयोजन कराया गया है, जिसमें पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धति के प्रचार प्रसार हेतु संबंधित वनमण्डलों में चलित परंपरागत स्वास्थ्य उपचार कैंप का वनमण्डलवार निम्नलिखित कार्यक्रम पूर्ण किया गया है :—

क्र.	वनमण्डल का नाम	दिनांक	प्रस्तावित स्थल	अध्येता का नाम एवं पदनाम
1	महासमुंद	22 फरवरी 2019	पासिद	श्री मुकेश कुमार पैंकरा, परियोजना सहायक, छत्तीसगढ़ राज्य जलवायु परिवर्तन केंद्र, रायपुर
		23 फरवरी 2019	चुहरी	
		23 फरवरी 2019	अमलौर	

पूर्व तैयारी :—

NAFCC परियोजनांतर्गत पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धति के प्रचार प्रसार हेतु महासमुंद वनमण्डल में चलित परंपरागत स्वास्थ्य उपचार कैंप का आयोजन कराने हेतु संबंधित वनमण्डलाधिकारी को पत्र क्र. /जल. परि./37/2019/293 दिनांक 15/02/2019 को पत्र जारी कर वनमण्डल महासमुंद में पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धति में दक्ष वैद्य का चयन कर उपरोक्त दिनांकों को संबंधित वनमण्डल में शासकीय वाहन क्रमांक सी. जी. — 02 एफ 0263 (कैम्पर) के माध्यम से परियोजना ग्रामों में जाकर पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धति के प्रचार प्रसार के लिए प्रातः 8:30 बजे दिनांक 22/02/2019 को रायपुर कार्यलय से प्रस्थान किया गया।

महासमुंद वनमण्डल क्षेत्र में स्वास्थ्य कैंप —

दिनांक 22/02/2019 को पारंपरिक स्वास्थ्य पद्धति के प्रचार प्रसार के लिए वनमण्डल महासमुंद के सिरपुर वन परिक्षेत्र ग्राम पासिद क्षेत्र में पहुंचकर बीट गार्ड श्री डी.पी.दूबे जी, साहू जी तथा क्षेत्रीय वैद्यराज 1. वैद्य श्री बैजूराम धीवर, 2. वैद्य श्री सुखचैन हीरवानी, से मिलकर उपचार स्वास्थ्य कैंप हेतु कार्य योजना का प्रारुप बनाकर दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक परंपरागत स्वास्थ्य उपचार कैंप कराया गया।

ग्राम पासिद में परंपरागत स्वास्थ्य उपचार

ग्राम चुहरी में परंपरागत स्वास्थ्य उपचार

दिनांक 23/02/2019 को ग्राम चुहरी में प्रातः 8:00 बजे से 11 बजे तक तथा ग्राम अमलौर में दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक परंपरागत स्वास्थ्य उपचार कैंप में वैद्यराज 1. वैद्य श्री दउआराम निषाद, 2. वैद्य श्री राम गोपाल यादव जी के माध्यम से परंपरागत स्वास्थ्य उपचार परामर्श दिया गया।

अवलोकन :—

जनजातीय क्षेत्रें में परम्परागत ज्ञान के आधार पर रक्तचाप और हृदय रोग के लिए अर्जुन की छाल, किडनी रोग के लिए अश्वगंध और अजवाइन, पथरी के लिए आपामाला बेल, भुंई आंवला और चरचटा की जड़ें, टीबी के लिए अडूसा और बहेड़ा की छाल आदि, पीलिया के लिए काली हारकंद, आम की छाल, कनेर की बेल और भुंईयां आंवला की जड़ के साथ मिश्री आदि का उपयोग उपचार के लिए किया जाता है।

ग्राम अमलौर में परंपरागत स्वास्थ्य उपचार

पारंपरिक स्वास्थ्य उपचार कैंप में पारंपरिक उपचार पद्धति द्वारा कुल 15 हितग्राहियों द्वारा परामर्श प्राप्त किया गया, तथा स्थानीय लोगों द्वारा प्रतिक्रिया (Feedback) दी गई।

ग्रामवासियों एवं वैद्यों द्वारा दिए गए सुझाव :—

- क्षेत्र में औषधीय गुणों वाले पौधों का रोपण किया जाए।
- क्षेत्र में औषधी निर्माण केंद्र की स्थापना की जाए।
- क्षेत्र में औषधी निर्माण हेतु प्रशिक्षण दिया जाए।
- क्षेत्र में रोजगार सृजन करने वाले कार्यों पर जोर दिया जाना चाहिए।

(मुकेश कुमार पैंकरा)
परियोजना सहायक,
छत्तीसगढ़ राज्य जलवायु परिवर्तन
केंद्र, रायपुर